॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(पञ्चम खण्ड)

शान्तिपर्व [सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

अनुवादक—

साहित्याचार्य पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

श्रीहरिः

विषय-सूची

(शान्तिपर्व)

अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या

(राजधर्मानुशासनपर्व)

१-युधिष्ठिरके पास नारद आदि महर्षियोंका आगमन और युधिष्ठिरका कर्णके साथ अपना सम्बन्ध बताते हुए कर्णको शाप मिलनेका वृत्तान्त पूछना १७

२-नारदजीका कर्णको शाप प्राप्त होनेका प्रसंग सुनाना २०

३-कर्णको ब्रह्मास्त्रकी प्राप्ति और परशुरामजीका शाप............................ २२

४-कर्णकी सहायतासे समागत राजाओंको पराजित करके दुर्योधनद्वारा स्वयंवरसे कलिंगराजकी कन्याका अपहरण......... २५

५-कर्णके बल और पराक्रमका वर्णन, उसके द्वारा जरासंधकी पराजय और जरासंधका कर्णको अंगदेशमें मालिनी नगरीका राज्य प्रदान करना.................................. २६

६-युधिष्ठिरकी चिन्ता, कुन्तीका उन्हें समझाना और स्त्रियोंको युधिष्ठिरका शाप......... २८

७-युधिष्ठिरका अर्जुनसे आन्तरिक खेद प्रकट करते हुए अपने लिये राज्य छोड़कर वनमें चले जानेका प्रस्ताव करना २९

८-अर्जुनका युधिष्ठिरके मतका निराकरण करते हुए उन्हें धनकी महत्ता बताना और राजधर्मके पालनके लिये जोर देते हुए यज्ञानुष्ठानके लिये प्रेरित करना ३२

९-युधिष्ठिरका वानप्रस्थ एवं संन्यासीके अनुसार जीवन व्यतीत करनेका निश्चय ३५

१०-भीमसेनका राजाके लिये संन्यासका विरोध करते हुए अपने कर्तव्यके ही पालनपर जोर देना....................................... ३८

११-अर्जुनका पक्षिरूपधारी इन्द्र और ऋषि-बालकोंके संवादका उल्लेखपूर्वक गृहस्थ-धर्मके पालनपर जोर देना ४०

१२-नकुलका गृहस्थ-धर्मकी प्रशंसा करते हुए राजा युधिष्ठिरको समझाना ४३

१३-सहदेवका युधिष्ठिरको ममता और आसक्तिसे रहित होकर राज्य करनेकी सलाह देना................................ ४६

१४-द्रौपदीका युधिष्ठिरको राजदण्डधारणपूर्वक पृथ्वीका शासन करनेके लिये प्रेरित करना... ४७

१५-अर्जुनके द्वारा राजदण्डकी महत्ताका वर्णन ५०

१६-भीमसेनका राजाको भुक्त दुःखोंकी स्मृति कराते हुए मोह छोड़कर मनको काबूमें करके राज्यशासन और यज्ञके लिये प्रेरित करना ५४

१७-युधिष्ठिरद्वारा भीमकी बातका विरोध करते हुए मुनिवृत्तिकी और ज्ञानी महात्माओंकी प्रशंसा ५६

१८-अर्जुनका राजा जनक और उनकी रानीका दृष्टान्त देते हुए युधिष्ठिरको संन्यास ग्रहण करनेसे रोकना.............................. ५८

१९-युधिष्ठिरद्वारा अपने मतकी यथार्थताका प्रतिपादन.................................... ६१

२०-मुनिवर देवस्थानका राजा युधिष्ठिरको यज्ञानुष्ठानके लिये प्रेरित करना ६३

२१-देवस्थान मुनिके द्वारा युधिष्ठिरके प्रति उत्तम धर्मका और यज्ञादि करनेका उपदेश ६५

२२-क्षत्रियधर्मकी प्रशंसा करते हुए अर्जुनका पुनः राजा युधिष्ठिरको समझाना ६६

२३-व्यासजीका शंख और लिखितकी कथा सुनाते हुए राजा सुद्युम्नके दण्डधर्मपालनका महत्त्व सुनाकर युधिष्ठिरको राजधर्ममें ही दृढ़ रहनेकी आज्ञा देना.................... ६७

२४-व्यासजीका युधिष्ठिरको राजा हयग्रीवका चरित्र सुनाकर उन्हें राजोचित कर्तव्यका पालन करनेके लिये जोर देना........... ७१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या

२५-सेनजित्‌के उपदेशयुक्त उद्‌गारोंका उल्लेख करके व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाना ७४

२६-युधिष्ठिरके द्वारा धनके त्यागकी ही महत्ताका प्रतिपादन ७७

२७-युधिष्ठिरको शोकवश शरीर त्याग देनेके लिये उद्यत देख व्यासजीका उन्हें उससे निवारण करके समझाना ७९

२८-अश्मा ऋषि और जनकके संवादद्वारा प्रारब्धकी प्रबलता बतलाते हुए व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाना ८२

२९-श्रीकृष्णके द्वारा नारद-सृंजय-संवादके रूपमें सोलह राजाओंका उपाख्यान संक्षेपमें सुनाकर युधिष्ठिरके शोकनिवारणका प्रयत्न ८६

३०-महर्षि नारद और पर्वतका उपाख्यान ९८

३१-सुवर्णष्ठीवीके जन्म, मृत्यु और पुनर्जीवनका वृत्तान्त १०१

३२-व्यासजीका अनेक युक्तियोंसे राजा युधिष्ठिरको समझाना १०४

३३-व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाते हुए कालकी प्रबलता बताकर देवासुरसंग्रामके उदाहरणसे धर्मद्रोहियोंके दमनका औचित्य सिद्ध करना और प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता बताना १०६

३४-जिन कर्मोंके करने और न करनेसे कर्ता प्रायश्चित्तका भागी होता और नहीं होता उनका विवेचन ११०

३५-पापकर्मके प्रायश्चित्तोंका वर्णन ११२

३६-स्वायम्भुव मनुके कथनानुसार धर्मका स्वरूप, पापसे शुद्धिके लिये प्रायश्चित्त, अभक्ष्य वस्तुओंका वर्णन तथा दानके अधिकारी एवं अनधिकारीका विवेचन ११६

३७-व्यासजी तथा भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे महाराज युधिष्ठिरका नगरमें प्रवेश १२०

३८-नगर-प्रवेशके समय पुरवासियों तथा ब्राह्मणोंद्वारा राजा युधिष्ठिरका सत्कार और उनपर आक्षेप करनेवाले चार्वाकका ब्राह्मणोंद्वारा वध १२३

३९-चार्वाकको प्राप्त हुए वर आदिका श्रीकृष्ण-द्वारा वर्णन १२६

४०-युधिष्ठिरका राज्याभिषेक १२७

४१-राजा युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रके अधीन रहकर राज्यकी व्यवस्थाके लिये भाइयों तथा अन्य लोगोंको विभिन्न कार्योंपर नियुक्त करना १२९

४२-राजा युधिष्ठिर तथा धृतराष्ट्रका युद्धमें मारे गये सगे-सम्बन्धियों तथा अन्य राजाओंके लिये श्राद्धकर्म करना १३०

४३-युधिष्ठिरद्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति १३१

४४-महाराज युधिष्ठिरके दिये हुए विभिन्न भवनोंमें भीमसेन आदि सब भाइयोंका प्रवेश और विश्राम १३३

४५-युधिष्ठिरके द्वारा ब्राह्मणों तथा आश्रितोंका सत्कार एवं दान और श्रीकृष्णके पास जाकर उनकी स्तुति करते हुए कृतज्ञता-प्रकाशन १३४

४६-युधिष्ठिर और श्रीकृष्णका संवाद, श्रीकृष्ण-द्वारा भीष्मकी प्रशंसा और युधिष्ठिरको उनके पास चलनेका आदेश १३६

४७-भीष्मद्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति—भीष्मस्तवराज १४०

४८-परशुरामजीद्वारा होनेवाले क्षत्रियसंहारके विषयमें राजा युधिष्ठिरका प्रश्न १५०

४९-परशुरामजीके उपाख्यानमें क्षत्रियोंके विनाश और पुनः उत्पन्न होनेकी कथा १५१

५०-श्रीकृष्णद्वारा भीष्मजीके गुण-प्रभावका सविस्तर वर्णन १५७

५१-भीष्मके द्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति तथा श्रीकृष्णका भीष्मकी प्रशंसा करते हुए उन्हें युधिष्ठिरके लिये धर्मोपदेश करनेका आदेश १६०

५२-भीष्मका अपनी असमर्थता प्रकट करना, भगवान्‌का उन्हें वर देना तथा ऋषियों एवं पाण्डवोंका दूसरे दिन आनेका संकेत करके वहाँसे विदा होकर अपने-अपने स्थानोंको जाना १६१

५३-भगवान् श्रीकृष्णकी प्रातश्चर्या, सात्यकिद्वारा उनका संदेश पाकर भाइयोंसहित युधिष्ठिरका उन्हींके साथ कुरुक्षेत्रमें पधारना १६४

५४-भगवान् श्रीकृष्ण और भीष्मजीकी बातचीत १६६

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या

५५-भीष्मका युधिष्ठिरके गुणकथनपूर्वक उनको प्रश्न करनेका आदेश देना, श्रीकृष्णका उनके लज्जित और भयभीत होनेका कारण बताना और भीष्मका आश्वासन पाकर युधिष्ठिरका उनके समीप जाना १७०

५६-युधिष्ठिरके पूछनेपर भीष्मके द्वारा राजधर्मका वर्णन, राजाके लिये पुरुषार्थ और सत्यकी आवश्यकता, ब्राह्मणोंकी अदण्डनीयता तथा राजाकी परिहासशीलता और मृदुतासे प्रकट होनेवाले दोष १७२

५७-राजाके धर्मानुकूल नीतिपूर्ण बर्तावका वर्णन १७६

५८-भीष्मद्वारा राज्यरक्षाके साधनोंका वर्णन तथा संध्याके समय युधिष्ठिर आदिका विदा होना और रास्तेमें स्नान-संध्यादि नित्यकर्मसे निवृत्त होकर हस्तिनापुरमें प्रवेश १८०

५९-ब्रह्माजीके नीतिशास्त्रका तथा राजा पृथुके चरित्रका वर्णन १८२

६०-वर्ण-धर्मका वर्णन १९४

६१-आश्रम-धर्मका वर्णन १९९

६२-ब्राह्मणधर्म और कर्तव्यपालनका महत्त्व २०१

६३-वर्णाश्रमधर्मका वर्णन तथा राजधर्मकी श्रेष्ठता २०२

६४-राजधर्मकी श्रेष्ठताका वर्णन और इस विषयमें इन्द्ररूपधारी विष्णु और मान्धाताका संवाद २०५

६५-इन्द्ररूपधारी विष्णु और मान्धाताका संवाद २०८

६६-राजधर्मके पालनसे चारों आश्रमोंके धर्मका फल मिलनेका कथन २११

६७-राष्ट्रकी रक्षा और उन्नतिके लिये राजाकी आवश्यकताका प्रतिपादन २१४

६८-वसुमना और बृहस्पतिके संवादमें राजाके न होनेसे प्रजाकी हानि और होनेसे लाभका वर्णन २१७

६९-राजाके प्रधान कर्तव्योंका तथा दण्डनीतिके द्वारा युगोंके निर्माणका वर्णन २२१

७०-राजाको इहलोक और परलोकमें सुखकी प्राप्ति करानेवाले छत्तीस गुणोंका वर्णन २३०

७१-धर्मपूर्वक प्रजाका पालन ही राजाका महान् धर्म है, इसका प्रतिपादन २३१

७२-राजाके लिये सदाचारी विद्वान् पुरोहितकी आवश्यकता तथा प्रजापालनका महत्त्व २३४

७३-विद्वान् सदाचारी पुरोहितकी आवश्यकता तथा ब्राह्मण और क्षत्रियमें मेल रहनेसे लाभ-विषयक राजा पुरूरवाका उपाख्यान २३६

७४-ब्राह्मण और क्षत्रियके मेलसे लाभका प्रतिपादन करनेवाला मुचुकुन्दका उपाख्यान २४०

७५-राजाके कर्तव्यका वर्णन, युधिष्ठिरका राज्यसे विरक्त होना एवं भीष्मजीका पुनः राज्यकी महिमा सुनाना २४१

७६-उत्तम-अधम ब्राह्मणोंके साथ राजाका बर्ताव २४४

७७-केकयराज तथा राक्षसका उपाख्यान और केकयराज्यकी श्रेष्ठताका विस्तृत वर्णन २४६

७८-आपत्तिकालमें ब्राह्मणके लिये वैश्यवृत्तिसे निर्वाह करनेकी छूट तथा लुटेरोंसे अपनी और दूसरोंकी रक्षा करनेके लिये सभी जातियोंको शस्त्र धारण करनेका अधिकार एवं रक्षकको सम्मानका पात्र स्वीकार करना २४९

७९-ऋत्विजोंके लक्षण, यज्ञ और दक्षिणाका महत्त्व तथा तपकी श्रेष्ठता २५२

८०-राजाके लिये मित्र और अमित्रकी पहचान तथा उन सबके साथ नीतिपूर्ण बर्तावका और मन्त्रीके लक्षणोंका वर्णन २५४

८१-कुटुम्बीजनोंमें दलबंदी होनेपर उस कुलके प्रधान पुरुषको क्या करना चाहिये? इसके विषयमें श्रीकृष्ण और नारदजीका संवाद २५७

८२-मन्त्रियोंकी परीक्षाके विषयमें तथा राजा और राजकीय मनुष्योंसे सतर्क रहनेके विषयमें कालकवृक्षीय मुनिका उपाख्यान २६०

८३-सभासद् आदिके लक्षण, गुप्त सलाह सुननेके अधिकारी और अनधिकारी तथा गुप्त-मन्त्रणाकी विधि एवं स्थानका निर्देश २६६

८४-इन्द्र और बृहस्पतिके संवादमें सान्त्वनापूर्ण मधुर वचन बोलनेका महत्त्व २७१

८५-राजाकी व्यावहारिक नीति, मन्त्रिमण्डलका संघटन, दण्डका औचित्य तथा दूत, द्वारपाल, शिरोरक्षक, मन्त्री और सेनापतिके गुण २७२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
८६	राजाके निवासयोग्य नगर एवं दुर्गका वर्णन, उसके लिये प्रजापालनसम्बन्धी व्यवहार तथा तपस्वीजनोंके समादरका निर्देश..	२७५
८७	राष्ट्रकी रक्षा तथा वृद्धिके उपाय	२७७
८८	प्रजासे कर लेने तथा कोश-संग्रह करनेका प्रकार......	२८०
८९	राजाके कर्तव्यका वर्णन	२८३
९०	उतथ्यका मान्धाताको उपदेश—राजाके लिये धर्मपालनकी आवश्यकता......	२८५
९१	उतथ्यके उपदेशमें धर्माचरणका महत्त्व और राजाके धर्मका वर्णन	२८८
९२	राजाके धर्मपूर्वक आचारके विषयमें वामदेवजीका वसुमनाको उपदेश......	२९३
९३	वामदेवजीके द्वारा राजोचित बर्तावका वर्णन	२९४
९४	वामदेवके उपदेशमें राजा और राज्यके लिये हितकर बर्ताव	२९७
९५	विजयाभिलाषी राजाके धर्मानुकूल बर्ताव तथा युद्धनीतिका वर्णन......	२९९
९६	राजाके छलरहित धर्मयुक्त बर्तावकी प्रशंसा	३०१
९७	शूरवीर क्षत्रियोंके कर्तव्यका तथा उनकी आत्मशुद्धि और सद्गतिका वर्णन ...	३०३
९८	इन्द्र और अम्बरीषके संवादमें नदी और यज्ञके रूपकोंका वर्णन तथा समरभूमिमें जूझते हुए मारे जानेवाले शूरवीरोंको उत्तम लोकोंकी प्राप्तिका कथन	३०५
९९	शूरवीरोंको स्वर्ग और कायरोंको नरककी प्राप्तिके विषयमें मिथिलेश्वर जनकका इतिहास	३११
१००	सैन्यसंचालनकी रीति-नीतिका वर्णन .	३१३
१०१	भिन्न-भिन्न देशके योद्धाओंके स्वभाव, रूप, बल, आचरण और लक्षणोंका वर्णन	३१७
१०२	विजयसूचक शुभाशुभ लक्षणोंका तथा उत्साही और बलवान् सैनिकोंका वर्णन एवं राजाको युद्धसम्बन्धी नीतिका निर्देश	३१९
१०३	शत्रुको वशमें करनेके लिये राजाको किस नीतिसे काम लेना चाहिये और दुष्टोंको कैसे पहचानना चाहिये—इसके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका संवाद......	३२२
१०४	राज्य, खजाना और सेना आदिसे वंचित हुए असहाय क्षेमदर्शी राजाके प्रति कालकवृक्षीय मुनिका वैराग्यपूर्ण उपदेश	३२७
१०५	कालकवृक्षीय मुनिके द्वारा गये हुए राज्यकी प्राप्तिके लिये विभिन्न उपायोंका वर्णन	३३१
१०६	कालकवृक्षीय मुनिका विदेहराज तथा कोसलराजकुमारमें मेल कराना और विदेहराजका कोसलराजको अपना जामाता बना लेना	३३४
१०७	गणतन्त्र राज्यका वर्णन और उसकी नीति......	३३७
१०८	माता-पिता तथा गुरुकी सेवाका महत्त्व	३३९
१०९	सत्य-असत्यका विवेचन, धर्मका लक्षण तथा व्यावहारिक नीतिका वर्णन	३४२
११०	सदाचार और ईश्वरभक्ति आदिको दुःखोंसे छूटनेका उपाय बताना......	३४५
१११	मनुष्यके स्वभावकी पहचान बतानेवाली बाघ और सियारकी कथा......	३४७
११२	एक तपस्वी ऊँटके आलस्यका कुपरिणाम और राजाका कर्तव्य	३५४
११३	शक्तिशाली शत्रुके सामने बेंतकी भाँति नतमस्तक होनेका उपदेश—सरिताओं और समुद्रका संवाद......	३५६
११४	दुष्ट मनुष्यद्वारा की हुई निन्दाको सह लेनेसे लाभ......	३५८
११५	राजा तथा राजसेवकोंके आवश्यक गुण	३६०
११६	सज्जनोंके चरित्रके विषयमें दृष्टान्तरूपसे एक महर्षि और कुत्तेकी कथा......	३६१
११७	कुत्तेका शरभकी योनिमें जाकर महर्षिके शापसे पुनः कुत्ता हो जाना	३६३
११८	राजाके सेवक, सचिव तथा सेनापति आदि और राजाके उत्तम गुणोंका वर्णन एवं उनसे लाभ......	३६५
११९	सेवकोंको उनके योग्य स्थानपर नियुक्त करने, कुलीन और सत्पुरुषोंका संग्रह करने, कोष बढ़ाने तथा सबकी देखभाल करनेके लिये राजाको प्रेरणा......	३६८
१२०	राजधर्मका साररूपमें वर्णन	३७०

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१२१	दण्डके स्वरूप, नाम, लक्षण, प्रभाव और प्रयोगका वर्णन......	३७५
१२२	दण्डकी उत्पत्ति तथा उसके क्षत्रियोंके हाथमें आनेकी परम्पराका वर्णन	३७९
१२३	त्रिवर्गका विचार तथा पापके कारण पदच्युत हुए राजाके पुनरुत्थानके विषयमें आंगरिष्ठ और कामन्दकका संवाद......	३८३
१२४	इन्द्र और प्रह्लादकी कथा—शीलका प्रभाव, शीलके अभावमें धर्म, सत्य, सदाचार, बल और लक्ष्मीके न रहनेका वर्णन..	३८५
१२५	युधिष्ठिरका आशाविषयक प्रश्न—उत्तरमें राजा सुमित्र और ऋषभ नामक ऋषिके इतिहासका आरम्भ, उसमें राजा सुमित्रका एक मृगके पीछे दौड़ना	३९०
१२६	राजा सुमित्रका मृगकी खोज करते हुए तपस्वी मुनियोंके आश्रमपर पहुँचना और उनसे आशाके विषयमें प्रश्न करना ...	३९१
१२७	ऋषभका राजा सुमित्रको वीरद्युम्न और तनु मुनिका वृत्तान्त सुनाना......	३९३
१२८	तनु मुनिका राजा वीरद्युम्नको आशाके स्वरूपका परिचय देना और ऋषभके उपदेशसे सुमित्रका आशाको त्याग देना	३९५
१२९	यम और गौतमका संवाद......	३९७
१३०	आपत्तिके समय राजाका धर्म	३९८
	(आपद्धर्मपर्व)	
१३१	आपत्तिग्रस्त राजाके कर्तव्यका वर्णन..	४०३
१३२	ब्राह्मणों और श्रेष्ठ राजाओंके धर्मका वर्णन तथा धर्मकी गतिको सूक्ष्म बताना	४०४
१३३	राजाके लिये कोशसंग्रहकी आवश्यकता, मर्यादाकी स्थापना और अमर्यादित दस्युवृत्तिकी निन्दा......	४०६
१३४	बलकी महत्ता और पापसे छूटनेका प्रायश्चित्त	४०८
१३५	मर्यादाका पालन करने-करानेवाले कायव्य नामक दस्युकी सद्गतिका वर्णन	४०९
१३६	राजा किसका धन ले और किसका न ले तथा किसके साथ कैसा बर्ताव करे—इसका विचार	४११
१३७	आनेवाले संकटसे सावधान रहनेके लिये दूरदर्शी, तत्कालज्ञ और दीर्घसूत्री—इन तीन मत्स्योंका दृष्टान्त	४१२
१३८	शत्रुओंसे घिरे हुए राजाके कर्तव्यके विषयमें बिडाल और चूहेका आख्यान	४१४
१३९	शत्रुसे सदा सावधान रहनेके विषयमें राजा ब्रह्मदत्त और पूजनी चिड़ियाका संवाद	४३०
१४०	भारद्वाज कणिकका सौराष्ट्रदेशके राजाको कूटनीतिका उपदेश......	४३९
१४१	'ब्राह्मण भयंकर संकटकालमें किस तरह जीवन-निर्वाह करे' इस विषयमें विश्वामित्र मुनि और चाण्डालका संवाद......	४४५
१४२	आपत्कालमें राजाके धर्मका निश्चय तथा उत्तम ब्राह्मणोंके सेवनका आदेश	४५३
१४३	शरणागतकी रक्षा करनेके विषयमें एक बहेलिये और कपोत-कपोतीका प्रसंग, सर्दीसे पीड़ित हुए बहेलियेका एक वृक्षके नीचे जाकर सोना	४५६
१४४	कबूतरद्वारा अपनी भार्याका गुणगान तथा पतिव्रता स्त्रीकी प्रशंसा......	४५९
१४५	कबूतरीका कबूतरसे शरणागत व्याधकी सेवाके लिये प्रार्थना	४६०
१४६	कबूतरके द्वारा अतिथि-सत्कार और अपने शरीरका बहेलियेके लिये परित्याग	४६१
१४७	बहेलियेका वैराग्य......	४६३
१४८	कबूतरीका विलाप और अग्निमें प्रवेश तथा उन दोनोंको स्वर्गलोककी प्राप्ति	४६४
१४९	बहेलियेको स्वर्गलोककी प्राप्ति	४६५
१५०	इन्द्रोत मुनिका राजा जनमेजयको फटकारना	४६७
१५१	ब्रह्महत्याके अपराधी जनमेजयका इन्द्रोत मुनिकी शरणमें जाना और इन्द्रोत मुनिका उनसे ब्राह्मणद्रोह न करनेकी प्रतिज्ञा कराकर उसे शरण देना......	४६८
१५२	इन्द्रोतका जनमेजयको धर्मोपदेश करके उनसे अश्वमेधयज्ञका अनुष्ठान कराना तथा निष्पाप राजाका पुनः अपने राज्यमें प्रवेश	४७०

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१५३	मृतककी पुनर्जीवन-प्राप्तिके विषयमें एक ब्राह्मण बालकके जीवित होनेकी कथा; उसमें गीध और सियारकी बुद्धिमत्ता	४७३
१५४	नारदजीका सेमल-वृक्षसे प्रशंसापूर्वक प्रश्न	४८२
१५५	नारदजीका सेमल-वृक्षको उसका अहंकार देखकर फटकारना	४८४
१५६	नारदजीकी बात सुनकर वायुका सेमलको धमकाना और सेमलका वायुको तिरस्कृत करके विचारमग्न होना	४८६
१५७	सेमलका हार स्वीकार करना तथा बलवान्‌के साथ वैर न करनेका उपदेश	४८७
१५८	समस्त अनर्थोंका कारण लोभको बताकर उससे होनेवाले विभिन्न पापोंका वर्णन तथा श्रेष्ठ महापुरुषोंके लक्षण	४८९
१५९	अज्ञान और लोभको एक दूसरेका कारण बताकर दोनोंकी एकता करना और दोनोंको ही समस्त दोषोंका कारण सिद्ध करना	४९१
१६०	मन और इन्द्रियोंके संयमरूप दमका माहात्म्य	४९२
१६१	तपकी महिमा	४९५
१६२	सत्यके लक्षण, स्वरूप और महिमाका वर्णन	४९६
१६३	काम, क्रोध आदि तेरह दोषोंका निरूपण और उनके नाशका उपाय	४९८
१६४	नृशंस अर्थात् अत्यन्त नीच पुरुषके लक्षण	५००
१६५	नाना प्रकारके पापों और उनके प्रायश्चित्तोंका वर्णन	५०१
१६६	खड्गकी उत्पत्ति और प्राप्तिकी परम्पराकी महिमाका वर्णन	५०८
१६७	धर्म, अर्थ और कामके विषयमें विदुर तथा पाण्डवोंके पृथक्-पृथक् विचार तथा अन्तमें युधिष्ठिरका निर्णय	५१४
१६८	मित्र बनाने एवं न बनाने योग्य पुरुषोंके लक्षण तथा कृतघ्न गौतमकी कथाका आरम्भ	५१८
१६९	गौतमका समुद्रकी ओर प्रस्थान और संध्याके समय एक दिव्य बकपक्षीके घरपर अतिथि होना	५२२
१७०	गौतमका राजधर्माद्वारा आतिथ्य-सत्कार और उसका राक्षसराज विरूपाक्षके भवनमें प्रवेश	५२३
१७१	गौतमका राक्षसराजके यहाँसे सुवर्णराशि लेकर लौटना और अपने मित्र बकके वधका घृणित विचार मनमें लाना	५२६
१७२	कृतघ्न गौतमद्वारा मित्र राजधर्माका वध तथा राक्षसोंद्वारा उसकी हत्या और कृतघ्नके मांसको अभक्ष्य बताना	५२८
१७३	राजधर्मा और गौतमका पुनः जीवित होना	५३०
	(मोक्षधर्मपर्व)	
१७४	शोकाकुल चित्तकी शान्तिके लिये राजा सेनजित् और ब्राह्मणके संवादका वर्णन	५३२
१७५	अपने कल्याणकी इच्छा रखनेवाले पुरुषका क्या कर्तव्य है, इस विषयमें पिताके प्रति पुत्रद्वारा ज्ञानका उपदेश	५३७
१७६	त्यागकी महिमाके विषयमें शम्पाक ब्राह्मणका उपदेश	५४०
१७७	मंकिगीता—धनकी तृष्णासे दुःख और उसकी कामनाके त्यागसे परम सुखकी प्राप्ति	५४२
१७८	जनककी उक्ति तथा राजा नहुषके प्रश्नोंके उत्तरमें बोध्यगीता	५४६
१७९	प्रह्लाद और अवधूतका संवाद—अजगर-वृत्तिकी प्रशंसा	५४८
१८०	सद्बुद्धिका आश्रय लेकर आत्महत्यादि पापकर्मसे निवृत्त होनेके सम्बन्धमें काश्यप ब्राह्मण और इन्द्रका संवाद	५५१
१८१	शुभाशुभ कर्मोंका परिणाम कर्ताको अवश्य भोगना पड़ता है, इसका प्रतिपादन	५५६
१८२	भरद्वाज और भृगुके संवादमें जगत्‌की उत्पत्तिका और विभिन्न तत्त्वोंका वर्णन	५५९
१८३	आकाशसे अन्य चार स्थूल भूतोंकी उत्पत्तिका वर्णन	५६२
१८४	पंचमहाभूतोंके गुणोंका विस्तारपूर्वक वर्णन	५६३
१८५	शरीरके भीतर जठरानल तथा प्राण-अपान आदि वायुओंकी स्थिति आदिका वर्णन	५६६

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१८६	जीवकी सत्तापर नाना प्रकारकी युक्तियोंसे शंका उपस्थित करना	५६८
१८७	जीवकी सत्ता तथा नित्यताको युक्तियोंसे सिद्ध करना	५६९
१८८	वर्णविभागपूर्वक मनुष्योंकी और समस्त प्राणियोंकी उत्पत्तिका वर्णन	५७२
१८९	चारों वर्णोंके अलग-अलग कर्मोंका और सदाचारका वर्णन तथा वैराग्यसे परब्रह्मकी प्राप्ति	५७३
१९०	सत्यकी महिमा, असत्यके दोष तथा लोक और परलोकके सुख-दुःखका विवेचन	५७५
१९१	ब्रह्मचर्य और गार्हस्थ्य आश्रमोंके धर्मका वर्णन	५७७
१९२	वानप्रस्थ और संन्यास धर्मोंका वर्णन तथा हिमालयके उत्तर पार्श्वमें स्थित उत्कृष्ट लोककी विलक्षणता एवं महत्ताका प्रतिपादन, भृगु-भरद्वाज-संवादका उपसंहार	५७९
१९३	शिष्टाचारका फलसहित वर्णन, पापको छिपानेसे हानि और धर्मकी प्रशंसा	५८२
१९४	अध्यात्मज्ञानका निरूपण	५८५
१९५	ध्यानयोगका वर्णन	५९०
१९६	जपयज्ञके विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न, उसके उत्तरमें जप और ध्यानकी महिमा और उसका फल	५९२
१९७	जापकमें दोष आनेके कारण उसे नरककी प्राप्ति	५९३
१९८	परमधामके अधिकारी जापकके लिये देवलोक भी नरकतुल्य हैं—इसका प्रतिपादन	५९५
१९९	जापकको सावित्रीका वरदान, उसके पास धर्म, यम और काल आदिका आगमन, राजा इक्ष्वाकु और जापक ब्राह्मणका संवाद, सत्यकी महिमा तथा जापककी परमगतिका वर्णन	५९६
२००	जापक ब्राह्मण और राजा इक्ष्वाकुकी उत्तम गतिका वर्णन तथा जापकको मिलनेवाले फलकी उत्कृष्टता	६०६
२०१	बृहस्पतिके प्रश्नके उत्तरमें मनुद्वारा कामनाओंके त्यागकी एवं ज्ञानकी प्रशंसा तथा परमात्मतत्त्वका निरूपण	६१०
२०२	आत्मतत्त्वका और बुद्धि आदि प्राकृत पदार्थोंका विवेचन तथा उसके साक्षात्कारका उपाय	६१४
२०३	शरीर, इन्द्रिय और मन-बुद्धिसे अतिरिक्त आत्माकी नित्य सत्ताका प्रतिपादन	६१७
२०४	आत्मा एवं परमात्माके साक्षात्कारका उपाय तथा महत्त्व	६१९
२०५	परब्रह्मकी प्राप्तिका उपाय	६२१
२०६	परमात्मतत्त्वका निरूपण—मनु-बृहस्पतिसंवादकी समाप्ति	६२३
२०७	श्रीकृष्णसे सम्पूर्ण भूतोंकी उत्पत्तिका तथा उनकी महिमाका कथन	६२६
२०८	ब्रह्माके पुत्र मरीचि आदि प्रजापतियोंके वंशका तथा प्रत्येक दिशामें निवास करनेवाले महर्षियोंका वर्णन	६३१
२०९	भगवान् विष्णुका वराहरूपमें प्रकट होकर देवताओंकी रक्षा और दानवोंका विनाश कर देना तथा नारदको अनुस्मृतिस्तोत्रका उपदेश और नारदद्वारा भगवान्‌की स्तुति	६३३
२१०	गुरु-शिष्यके संवादका उल्लेख करते हुए श्रीकृष्ण-सम्बन्धी अध्यात्मतत्त्वका वर्णन	६४२
२११	संसारचक्र और जीवात्माकी स्थितिका वर्णन	६४६
२१२	निषिद्ध आचरणके त्याग, सत्त्व, रज और तमके कार्य एवं परिणामका तथा सत्त्वगुणके सेवनका उपदेश	६४७
२१३	जीवोत्पत्तिका वर्णन करते हुए दोषों और बन्धनोंसे मुक्त होनेके लिये विषयासक्तिके त्यागका उपदेश	६५०
२१४	ब्रह्मचर्य तथा वैराग्यसे मुक्ति	६५२
२१५	आसक्ति छोड़कर सनातन ब्रह्मकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न करनेका उपदेश	६५४
२१६	स्वप्न और सुषुप्ति-अवस्थामें मनकी स्थिति तथा गुणातीत ब्रह्मकी प्राप्तिका उपाय	६५७

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२१७	सच्चिदानन्दघन परमात्मा, दृश्यवर्ग, प्रकृति और पुरुष (जीवात्मा) उन चारोंके ज्ञानसे मुक्तिका कथन तथा परमात्मप्राप्तिके अन्य साधनोंका भी वर्णन	६५८
२१८	राजा जनकके दरबारमें पंचशिखका आगमन और उनके द्वारा नास्तिक मतोंके निराकरणपूर्वक शरीरसे भिन्न आत्माकी नित्य सत्ताका प्रतिपादन	६६२
२१९	पंचशिखके द्वारा मोक्ष-तत्त्वका विवेचन एवं भगवान् विष्णुद्वारा मिथिलानरेश जनकवंशी जनदेवकी परीक्षा और उनके लिये वरप्रदान	६६८
२२०	श्वेतकेतु और सुवर्चलाका विवाह, दोनों पति-पत्नीका अध्यात्मविषयक संवाद तथा गार्हस्थ्य-धर्मका पालन करते हुए ही उनका परमात्माको प्राप्त होना एवं दमकी महिमाका वर्णन	६७४
२२१	व्रत, तप, उपवास, ब्रह्मचर्य तथा अतिथिसेवा आदिका विवेचन तथा यज्ञशिष्ट अन्नका भोजन करनेवालेको परम उत्तम गतिकी प्राप्तिका कथन	६८३
२२२	सनत्कुमारजीका ऋषियोंको भगवत्स्वरूपका उपदेश देना	६८५
२२३	इन्द्र और बलिका संवाद—इन्द्रके आक्षेप-युक्त वचनोंका बलिके द्वारा कठोर प्रत्युत्तर	६९१
२२४	बलि और इन्द्रका संवाद, बलिके द्वारा कालकी प्रबलताका प्रतिपादन करते हुए इन्द्रको फटकारना	६९४
२२५	इन्द्र और लक्ष्मीका संवाद, बलिको त्यागकर आयी हुई लक्ष्मीकी इन्द्रके द्वारा प्रतिष्ठा	६९८
२२६	इन्द्र और नमुचिका संवाद	७०१
२२७	इन्द्र और बलिका संवाद—काल और प्रारब्धकी महिमाका वर्णन	७०३
२२८	दैत्योंको त्यागकर इन्द्रके पास लक्ष्मीदेवीका आना तथा किन सद्गुणोंके होनेपर लक्ष्मी आती हैं और किन दुर्गुणोंके होनेपर वे त्यागकर चली जाती हैं, इस बातको विस्तारपूर्वक बताना	७१२
२२९	जैगीषव्यका असित-देवलको समत्वबुद्धिका उपदेश	७२०
२३०	श्रीकृष्ण और उग्रसेनका संवाद—नारदजीकी लोकप्रियताके हेतुभूत गुणोंका वर्णन	७२२
२३१	शुकदेवजीका प्रश्न और व्यासजीका उनके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए कालका स्वरूप बताना	७२४
२३२	व्यासजीका शुकदेवको सृष्टिके उत्पत्ति-क्रम तथा युगधर्मोंका उपदेश	७२७
२३३	ब्राह्मप्रलय एवं महाप्रलयका वर्णन	७३०
२३४	ब्राह्मणोंका कर्तव्य और उन्हें दान देनेकी महिमाका वर्णन	७३२
२३५	ब्राह्मणके कर्तव्यका प्रतिपादन करते हुए कालरूप नदको पार करनेका उपाय बतलाना	७३५
२३६	ध्यानके सहायक योग, उनके फल और सात प्रकारकी धारणाओंका वर्णन तथा सांख्य एवं योगके अनुसार ज्ञानद्वारा मोक्षकी प्राप्ति	७३७
२३७	सृष्टिके समस्त कार्योंमें बुद्धिकी प्रधानता और प्राणियोंकी श्रेष्ठताके तारतम्यका वर्णन	७४२
२३८	नाना प्रकारके भूतोंकी समीक्षापूर्वक कर्मतत्त्वका विवेचन, युगधर्मका वर्णन एवं कालका महत्त्व	७४४
२३९	ज्ञानका साधन और उसकी महिमा	७४५
२४०	योगसे परमात्माकी प्राप्तिका वर्णन	७४८
२४१	कर्म और ज्ञानका अन्तर तथा ब्रह्म-प्राप्तिके उपायका वर्णन	७५१
२४२	आश्रमधर्मकी प्रस्तावना करते हुए ब्रह्मचर्य-आश्रमका वर्णन	७५३
२४३	ब्राह्मणोंके उपलक्षणसे गार्हस्थ्य-धर्मका वर्णन	७५५
२४४	वानप्रस्थ और संन्यास-आश्रमके धर्म और महिमाका वर्णन	७५८
२४५	संन्यासीके आचरण और ज्ञानवान् संन्यासीकी प्रशंसा	७६१
२४६	परमात्माकी श्रेष्ठता, उसके दर्शनका उपाय तथा इस ज्ञानमय उपदेशके पात्रका निर्णय	७६४

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२४७	महाभूतादि तत्त्वोंका विवेचन	७६६
२४८	बुद्धिकी श्रेष्ठता और प्रकृति-पुरुष-विवेक	७६८
२४९	ज्ञानके साधन तथा ज्ञानीके लक्षण और महिमा	७७०
२५०	परमात्माकी प्राप्तिका साधन, संसार-नदीका वर्णन और ज्ञानसे ब्रह्मकी प्राप्ति	७७२
२५१	ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणके लक्षण और परब्रह्मकी प्राप्तिका उपाय	७७४
२५२	शरीरमें पंचभूतोंके कार्य और गुणोंकी पहचान	७७६
२५३	स्थूल, सूक्ष्म और कारण-शरीरसे भिन्न जीवात्माका और परमात्माका योगके द्वारा साक्षात्कार करनेका प्रकार	७७७
२५४	कामरूपी अद्भुत वृक्षका तथा उसे काटकर मुक्ति प्राप्त करनेके उपायका और शरीररूपी नगरका वर्णन	७७८
२५५	पंचभूतोंके तथा मन और बुद्धिके गुणोंका विस्तृत वर्णन	७७९
२५६	युधिष्ठिरका मृत्युविषयक प्रश्न, नारदजीका राजा अकम्पनसे मृत्युकी उत्पत्तिका प्रसंग सुनाते हुए ब्रह्माजीकी रोषाग्निसे प्रजाके दग्ध होनेका वर्णन	७८१
२५७	महादेवजीकी प्रार्थनासे ब्रह्माजीके द्वारा अपनी रोषाग्निका उपसंहार तथा मृत्युकी उत्पत्ति	७८२
२५८	मृत्युकी घोर तपस्या और प्रजापतिकी आज्ञासे उसका प्राणियोंके संहारका कार्य स्वीकार करना	७८४
२५९	धर्माधर्मके स्वरूपका निर्णय	७८७
२६०	युधिष्ठिरका धर्मकी प्रामाणिकतापर संदेह उपस्थित करना	७९०
२६१	जाजलिकी घोर तपस्या, सिरपर जटाओंमें पक्षियोंके घोंसला बनानेसे उनका अभिमान और आकाशवाणीकी प्रेरणासे उनका तुलाधार वैश्यके पास जाना	७९२
२६२	जाजलि और तुलाधारका धर्मके विषयमें संवाद	७९६
२६३	जाजलिको तुलाधारका आत्मयज्ञविषयक धर्मका उपदेश	८०१
२६४	जाजलिको पक्षियोंका उपदेश	८०४
२६५	राजा विचख्नुके द्वारा अहिंसा-धर्मकी प्रशंसा	८०६
२६६	महर्षि गौतम और चिरकारीका उपाख्यान-दीर्घकालतक सोच-विचारकर कार्य करनेकी प्रशंसा	८०८
२६७	द्युमत्सेन और सत्यवान्का संवाद—अहिंसापूर्वक राज्यशासनकी श्रेष्ठताका कथन	८१५
२६८	स्यूमरश्मि और कपिलका संवाद—स्यूमरश्मिके द्वारा यज्ञकी अवश्यकर्तव्यताका निरूपण	८१८
२६९	प्रवृत्ति एवं निवृत्तिमार्गके विषयमें स्यूमरश्मि-कपिल संवाद	८२१
२७०	स्यूमरश्मि-कपिल-संवाद—चारों आश्रमोंमें उत्तम साधनोंके द्वारा ब्रह्मकी प्राप्तिका कथन	८२७
२७१	धन और काम-भोगोंकी अपेक्षा धर्म और तपस्याका उत्कर्ष सूचित करनेवाली ब्राह्मण और कुण्डधार मेघकी कथा	८३०
२७२	यज्ञमें हिंसाकी निन्दा और अहिंसाकी प्रशंसा	८३५
२७३	धर्म, अधर्म, वैराग्य और मोक्षके विषयमें युधिष्ठिरके चार प्रश्न और उनका उत्तर	८३६
२७४	मोक्षके साधनका वर्णन	८३८
२७५	जीवात्माके देहाभिमानसे मुक्त होनेके विषयमें नारद और असितदेवलका संवाद	८४०
२७६	तृष्णाके परित्यागके विषयमें माण्डव्य मुनि और जनकका संवाद	८४३
२७७	शरीर और संसारकी अनित्यता तथा आत्म-कल्याणकी इच्छा रखनेवाले पुरुषके कर्तव्यका निर्देश—पिता-पुत्रका संवाद	८४४
२७८	हारीत मुनिके द्वारा प्रतिपादित संन्यासीके स्वभाव, आचरण और धर्मोंका वर्णन	८४७
२७९	ब्रह्मकी प्राप्तिका उपाय तथा उस विषयमें वृत्र-शुक्र-संवादका आरम्भ	८४९
२८०	वृत्रासुरको सनत्कुमारका अध्यात्मविषयक उपदेश देना और उसकी परमगति तथा भीष्मद्वारा युधिष्ठिरकी शंकाका निवारण	८५२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२८१	इन्द्र और वृत्रासुरके युद्धका वर्णन	८६१
२८२	वृत्रासुरका वध और उससे प्रकट हुई ब्रह्महत्याका ब्रह्माजीके द्वारा चार स्थानोंमें विभाजन	८६४
२८३	शिवजीद्वारा दक्षयज्ञका भंग और उनके क्रोधसे ज्वरकी उत्पत्ति तथा उसके विविध रूप	८६८
२८४	पार्वतीके रोष एवं खेदका निवारण करनेके लिये भगवान् शिवके द्वारा दक्षयज्ञका विध्वंस, दक्षद्वारा किये हुए शिवसहस्रनाम-स्तोत्रसे संतुष्ट होकर महादेवजीका उन्हें वरदान देना तथा इस स्तोत्रकी महिमा	८७३
२८५	अध्यात्मज्ञानका और उसके फलका वर्णन	८८९
२८६	समंगके द्वारा नारदजीसे अपनी शोकहीन स्थितिका वर्णन	८९३
२८७	नारदजीका गालव मुनिको श्रेयका उपदेश	८९५
२८८	अरिष्टनेमिका राजा सगरको वैराग्योत्पादक मोक्षविषयक उपदेश	८९९
२८९	भृगुपुत्र उशनाका चरित्र और उन्हें शुक्र नामकी प्राप्ति	९०२
२९०	पराशरगीताका आरम्भ—पराशर मुनिका राजा जनकको कल्याणकी प्राप्तिके साधनका उपदेश........	९०५
२९१	पराशरगीता—कर्मफलकी अनिवार्यता तथा पुण्यकर्मसे लाभ	९०८
२९२	पराशरगीता—धर्मोपार्जित धनकी श्रेष्ठता, अतिथि-सत्कारका महत्त्व, पाँच प्रकारके ऋणोंसे छूटनेकी विधि, भगवत्स्तवनकी महिमा एवं सदाचार तथा गुरुजनोंकी सेवासे महान् लाभ	९१०
२९३	पराशरगीता—शूद्रके लिये सेवावृत्तिकी प्रधानता, सत्संगकी महिमा और चारों वर्णोंके धर्मपालनका महत्त्व	९११
२९४	पराशरगीता—ब्राह्मण और शूद्रकी जीविका, निन्दनीय कर्मोंके त्यागकी आज्ञा, मनुष्योंमें आसुरभावकी उत्पत्ति और भगवान् शिवके द्वारा उसका निवारण तथा स्वधर्मके अनुसार कर्तव्य-पालनका आदेश	९१३
२९५	पराशरगीता—विषयासक्त मनुष्यका पतन, तपोबलकी श्रेष्ठता तथा दृढ़तापूर्वक स्वधर्मपालनका आदेश	९१६
२९६	पराशरगीता—वर्णविशेषकी उत्पत्तिका रहस्य, तपोबलसे उत्कृष्ट वर्णकी प्राप्ति, विभिन्न वर्णोंके विशेष और सामान्य धर्म, सत्कर्मकी श्रेष्ठता तथा हिंसारहित धर्मका वर्णन	९१८
२९७	पराशरगीता—नाना प्रकारके धर्म और कर्तव्योंका उपदेश	९२१
२९८	पराशरगीताका उपसंहार—राजा जनकके विविध प्रश्नोंका उत्तर	९२५
२९९	हंसगीता—हंसरूपधारी ब्रह्माका साध्यगणोंको उपदेश	९२९
३००	सांख्य और योगका अन्तर बतलाते हुए योगमार्गके स्वरूप, साधन, फल और प्रभावका वर्णन	९३५
३०१	सांख्ययोगके अनुसार साधन और उसके फलका वर्णन	९४०
३०२	वसिष्ठ और करालजनकका संवाद—क्षर और अक्षरतत्त्वका निरूपण और इनके ज्ञानसे मुक्ति	९४८
३०३	प्रकृति संसर्गके कारण जीवका अपनेको नाना प्रकारके कर्मोंका कर्ता और भोक्ता मानना एवं नाना योनियोंमें बारंबार जन्म ग्रहण करना........	९५२
३०४	प्रकृतिके संसर्गदोषसे जीवका पतन...	९५६
३०५	क्षर-अक्षर एवं प्रकृति-पुरुषके विषयमें राजा जनककी शंका और उसका वसिष्ठजीद्वारा उत्तर	९५७
३०६	योग और सांख्यके स्वरूपका वर्णन तथा आत्मज्ञानसे मुक्ति	९६१
३०७	विद्या-अविद्या, अक्षर और क्षर तथा प्रकृति और पुरुषके स्वरूपका एवं विवेकीके उद्गारका वर्णन	९६५
३०८	क्षर-अक्षर और परमात्मतत्त्वका वर्णन, जीवके नानात्व और एकत्वका दृष्टान्त, उपदेशके अधिकारी और अनधिकारी तथा इस ज्ञानकी परम्पराको बताते हुए वसिष्ठ-करालजनक-संवादका उपसंहार	९६८

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३०९	जनकवंशी वसुमान्को एक मुनिका धर्म-विषयक उपदेश........	९७३
३१०	याज्ञवल्क्यका राजा जनकको उपदेश—सांख्यमतके अनुसार चौबीस तत्त्वों और नौ प्रकारके सर्गोंका निरूपण	९७५
३११	अव्यक्त, महत्तत्त्व, अहंकार, मन और विषयोंकी कालसंख्याका एवं सृष्टिका वर्णन तथा इन्द्रियोंमें मनकी प्रधानताका प्रतिपादन	९७७
३१२	संहारक्रमका वर्णन	९७८
३१३	अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैवतका वर्णन तथा सात्त्विक, राजस और तामस भावोंके लक्षण	९८०
३१४	सात्त्विक, राजस और तामस प्रकृतिके मनुष्योंकी गतिका वर्णन तथा राजा जनकके प्रश्न...	९८१
३१५	प्रकृति-पुरुषका विवेक और उसका फल	९८३
३१६	योगका वर्णन और उसके साधनसे परब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति	९८४
३१७	विभिन्न अंगोंसे प्राणोंके उत्क्रमणका फल तथा मृत्युसूचक लक्षणोंका वर्णन और मृत्युको जीतनेका उपाय	९८७
३१८	याज्ञवल्क्यद्वारा अपनेको सूर्यसे वेदज्ञानकी प्राप्तिका प्रसंग सुनाना, विश्वावसुको जीवात्मा और परमात्माकी एकताके ज्ञानका उपदेश देकर उसका फल मुक्ति बताना तथा जनकको उपदेश देकर विदा होना	९८९
३१९	जरा-मृत्युका उल्लंघन करनेके विषयमें पंचशिख और राजा जनकका संवाद .	९९८
३२०	राजा जनककी परीक्षा करनेके लिये आयी हुई सुलभाका उनके शरीरमें प्रवेश करना, राजा जनकका उसपर दोषारोपण करना एवं सुलभाका युक्तियोंद्वारा निराकरण करते हुए राजा जनकको अज्ञानी बताना	१०००
३२१	व्यासजीका अपने पुत्र शुकदेवको वैराग्य और धर्मपूर्ण उपदेश देते हुए सावधान करना........	१०१४
३२२	शुभाशुभ कर्मोंका परिणाम कर्ताको अवश्य भोगना पड़ता है, इसका प्रतिपादन....	१०२२
३२३	व्यासजीकी पुत्रप्राप्तिके लिये तपस्या और भगवान् शंकरसे वरप्राप्ति	१०२३
३२४	शुकदेवजीकी उत्पत्ति और उनके यज्ञोपवीत, वेदाध्ययन एवं समावर्तन-संस्कारका वृत्तान्त	१०२५
३२५	पिताकी आज्ञासे शुकदेवजीका मिथिलामें जाना और वहाँ उनका द्वारपाल, मन्त्री और युवती स्त्रियोंके द्वारा सत्कृत होनेके उपरान्त ध्यानमें स्थित हो जाना........	१०२७
३२६	राजा जनकके द्वारा शुकदेवजीका पूजन तथा उनके प्रश्नका समाधान करते हुए ब्रह्मचर्याश्रममें परमात्माकी प्राप्ति होनेके बाद अन्य तीनों आश्रमोंकी अनावश्यकताका प्रतिपादन करना तथा मुक्त पुरुषके लक्षणोंका वर्णन	१०३१
३२७	शुकदेवजीका पिताके पास लौट आना तथा व्यासजीका अपने शिष्योंको स्वाध्यायकी विधि बताना........	१०३६
३२८	शिष्योंके जानेके बाद व्यासजीके पास नारदजीका आगमन और व्यासजीको वेदपाठके लिये प्रेरित करना तथा व्यासजीका शुकदेवको अनध्यायका कारण बताते हुए 'प्रवह' आदि सात वायुओंका परिचय देना	१०३९
३२९	शुकदेवजीको नारदजीका वैराग्य और ज्ञानका उपदेश	१०४३
३३०	शुकदेवको नारदजीका सदाचार और अध्यात्मविषयक उपदेश	१०४९
३३१	नारदजीका शुकदेवको कर्मफल-प्राप्तिमें परतन्त्रताविषयक उपदेश तथा शुकदेवजीका सूर्यलोकमें जानेका निश्चय	१०५१
३३२	शुकदेवजीकी ऊर्ध्वगतिका वर्णन	१०५६
३३३	शुकदेवजीकी परमपद-प्राप्ति तथा पुत्र-शोकसे व्याकुल व्यासजीको महादेवजीका आश्वासन देना........	१०५८
३३४	बदरिकाश्रममें नारदजीके पूछनेपर भगवान् नारायणका परमदेव परमात्माको ही सर्वश्रेष्ठ पूजनीय बताना	१०६१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३३५	नारदजीका श्वेतद्वीपदर्शन, वहाँके निवासियोंके स्वरूपका वर्णन, राजा उपरिचरका चरित्र तथा पांचरात्रकी उत्पत्तिका प्रसंग	१०६५
३३६	राजा उपरिचरके यज्ञमें भगवान्‌पर बृहस्पतिका क्रोधित होना, एकत आदि मुनियोंका बृहस्पतिसे श्वेतद्वीप एवं भगवान्‌की महिमाका वर्णन करके उनको शान्त करना	१०६९
३३७	यज्ञमें आहुतिके लिये अजका अर्थ अन्न है, बकरा नहीं—इस बातको जानते हुए भी पक्षपात करनेके कारण राजा उपरिचरके अधःपतनकी और भगवत्कृपासे उनके पुनरुत्थानकी कथा	१०७४
३३८	नारदजीका सौ सौ नामोंद्वारा भगवान्‌की स्तुति करना	१०७७
३३९	श्वेतद्वीपमें नारदजीको भगवान्‌का दर्शन, भगवान्‌का वासुदेव-संकर्षण आदि अपने व्यूहस्वरूपोंका परिचय कराना और भविष्यमें होनेवाले अवतारोंके कार्योंकी सूचना देना और इस कथाके श्रवण-पठनका माहात्म्य	१०७९
३४०	व्यासजीका अपने शिष्योंको भगवान्‌द्वारा ब्रह्मादि देवताओंसे कहे हुए प्रवृत्ति और निवृत्तिरूप धर्मके उपदेशका रहस्य बताना	१०९०
३४१	भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनको अपने प्रभावका वर्णन करते हुए अपने नामोंकी व्युत्पत्ति एवं माहात्म्य बताना	१०९८
३४२	सृष्टिकी [illegible] वर्णन, [illegible]	११०४
३४३	[illegible]	१११०
३४४	[illegible]	११११
३४५	भगवान् वराहके द्वारा पितरोंके पूजनकी मर्यादाका स्थापित होना	११२४
३४६	नारायणकी महिमासम्बन्धी उपाख्यानका उपसंहार	११२६
३४७	हयग्रीव-अवतारकी कथा, वेदोंका उद्धार, मधुकैटभका वध तथा नारायणकी महिमाका वर्णन	११२८
३४८	सात्वत-धर्मकी उपदेश-परम्परा तथा भगवान्‌के प्रति ऐकान्तिक भावकी महिमा	११३५
३४९	व्यासजीका सृष्टिके प्रारम्भमें भगवान् नारायणके अंशसे सरस्वतीपुत्र अपान्तरतमाके रूपमें जन्म होनेकी और उनके प्रभावकी कथा	११४१
३५०	वैजयन्त पर्वतपर ब्रह्मा और रुद्रका मिलन एवं ब्रह्माजीद्वारा परम पुरुष नारायणकी महिमाका वर्णन	११४७
३५१	ब्रह्मा और रुद्रके संवादमें नारायणकी महिमाका विशेषरूपसे वर्णन	११४९
३५२	नारदके द्वारा इन्द्रको उञ्छवृत्तिवाले ब्राह्मणकी कथा सुनानेका उपक्रम	११५१
३५३	महापद्मपुरमें एक श्रेष्ठ ब्राह्मणके सदाचारका वर्णन और उसके घरपर अतिथिका आगमन	११५२
३५४	अतिथिद्वारा स्वर्गके विभिन्न मार्गोंका कथन	११५३
३५५	अतिथिद्वारा नागराज पद्मनाभके सदाचार और सद्गुणोंका वर्णन तथा ब्राह्मणको उसके पास जानेके लिये प्रेरणा	११५४
३५६	अतिथिके वचनोंसे संतुष्ट होकर ब्राह्मणका उसके कथनानुसार नागराजके घरकी ओर प्रस्थान	११५५
३५७	नागपत्नीके द्वारा ब्राह्मणका सत्कार और वार्तालापके बाद ब्राह्मणके द्वारा नागराजके आगमनकी प्रतीक्षा	११५७
३५८	नागराजके दर्शनके लिये ब्राह्मणकी तपस्या तथा नागराजके परिवारवालोंका भोजनके लिये ब्राह्मणसे आग्रह करना	११५८
३५९	नागराजका घर लौटना, पत्नीके साथ उनकी धर्मविषयक बातचीत तथा पत्नीका उनसे ब्राह्मणको दर्शन देनेके लिये अनुरोध	११५९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३६०	पत्नीके धर्मयुक्त वचनोंसे नागराजके अभिमान एवं रोषका नाश और उनका ब्राह्मणको दर्शन देनेके लिये उद्यत होना	११६०
३६१	नागराज और ब्राह्मणका परस्पर मिलन तथा बातचीत	११६२
३६२	नागराजका ब्राह्मणके पूछनेपर सूर्यमण्डलकी आश्चर्यजनक घटनाओंको सुनाना	११६३
३६३	उञ्छ एवं शिलवृत्तिसे सिद्ध हुए पुरुषकी दिव्य गति	११६५
३६४	ब्राह्मणका नागराजसे बातचीत करके और उञ्छव्रतके पालनका निश्चय करके अपने घरको जानेके लिये नागराजसे विदा माँगना	११६६
३६५	नागराजसे विदा ले ब्राह्मणका च्यवनमुनिसे उञ्छवृत्तिकी दीक्षा लेकर साधनपरायण होना और इस कथाकी परम्पराका वर्णन	११६७

चित्र-सूची

[सादा]

१-सुवर्णमय पक्षीके रूपमें देवराज इन्द्रका संन्यासी बने हुए ब्राह्मण-बालकोंको उपदेश ... ४२
२-स्वयं श्रीकृष्ण शोकमग्न युधिष्ठिरको समझा रहे हैं ... ८८
३-ध्यानमग्न श्रीकृष्णसे युधिष्ठिर प्रश्न कर रहे हैं ... १३७
४-भगवान् श्रीकृष्णका देवर्षि नारद एवं पाण्डवोंको लेकर शरशय्याशित भीष्मके निकट गमन ... १६७
५-राजासे हीन प्रजाकी ब्रह्माजीसे राजाके लिये प्रार्थना ... १८५
६-राजा वेनके बाहु-मन्थनसे महाराज पृथुका प्राकट्य ... १९९
७-राजा क्षेमदर्शी और कालकवृक्षीय मुनि ... २६२
८-राजर्षि जनक अपने सैनिकोंको स्वर्ग और नरककी बात कह रहे हैं ... ३११
९-कालकवृक्षीय मुनि राजा जनकका राजकुमार क्षेमदर्शीके साथ मेल करा रहे हैं ... ३३५
१०-[illegible] ... ३५७
११-मुनिकी शरणागतिके फलस्वरूप [illegible] ... ४२४
१२-मरे हुए ब्राह्मण-बालकपर तथा गीध एवं गीदड़पर शंकरजीकी कृपा ... ४८३
१३-काश्यप ब्राह्मणके प्रति गीदड़के रूपमें इन्द्रका उपदेश ... ५१२
१४-इन्द्रको पहचाननेपर काश्यपद्वारा उनकी पूजा ... ५५२
१५-महर्षि भृगुके साथ भरद्वाज मुनिका प्रश्नोत्तर ... ५५८
१६-जापक ब्राह्मण एवं महाराज इक्ष्वाकुकी ऊर्ध्वगति ... ६०८
१७-प्रजापति मनु एवं महर्षि बृहस्पतिका संवाद ... ६११
१८-भगवान् वराहकी ऋषियोंद्वारा स्तुति ... ६३५
१९-महर्षि पञ्चशिखका महाराज जनकको उपदेश ... ६६४
२०-देवर्षि एवं देवराजको भगवती लक्ष्मीका दर्शन ... ७२४
२१-मुनि जाजलिकी तपस्या ... ७२४
२२-चिरकारी शस्त्र त्यागकर अपने पिताको प्रणाम कर रहे हैं ... ७९२
२३-सनकादि महर्षियोंकी शुक्राचार्य एवं वृत्रासुरसे भेंट ... ८५३
२४-दक्षके यज्ञमें शिवजीका प्राकट्य ... ८७८
२५-साध्यगणोंको हंसरूपमें ब्रह्माजीका उपदेश ... ९३१
२६-महर्षि वसिष्ठका राजा कराल जनकको उपदेश ... ९५०
२७-महर्षि याज्ञवल्क्यके स्मरणसे देवी सरस्वतीका प्राकट्य ... ९९९
२८-राजा जनकके द्वारा शुकदेवजीका पूजन ... १०३२
२९-शुकदेवजीको नारदजीका उपदेश ... १०४४
३०-नर नारायणका नारदजीके साथ संवाद ... १०५३
३१-(२६ लाइन चित्र फरमोंमें)